ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.2, JULY-DEC,2023 /36

नशे के प्रति युवकों का बढ़ता रुझान–एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 अखिलेश कुमार त्रिपाठी, सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग,
टी0एन0पी0जी0कालेज, टाण्डा,अम्बेडकरनगर

DOI- https://doi.org/10.61410/had.v18i2.141

प्रस्तावना

संघर्ष को मानव जीवन का दूसरा नाम कहा जाता है। इस संघर्ष से व्यक्ति कुन्दन की तरह शुद्ध और पवित्र बन जाता है जिन लोगों में मानसिक दृढ़ता नहीं होती है वे संघर्ष के आगे घुटने टेक देते हैं और अपनी सफलता से बचने के लिए नशे को सहारा बनाते हैं। नशा एक ऐसी बीमारी है जो हमे हमारे समाज को, हमारे देश को तेजी से निगलते जा रहा है। आज शहर और गांवो मे पढने लिखने की उम्र में विद्यालय एवं कॉलेज के छात्रों के साथ भावी शिक्षक भी मादक पदार्थों के बाहुपाश में जकड़ते जा रहे हैं। एक पतन की ओर जाने वाला व्यक्ति समाज और राष्ट्र दोनों के लिए घातक सिद्ध होता है। नशा सभी बुराईयों की जड़ है।

18 वीं शताब्दी के अन्त में नशे की लत ने विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। 19 वीं शताब्दी में यह बढ़कर चर्चा की सीमाएं लांघ गया और धार्मिक कृत्यों एंव बलिदानों से पूर्व मद्य सेवन आरम्भ हो गया।

20 वीं शताब्दी के आरम्भ में यह समस्या मनोवैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों एवं चिकित्सा, व्यवसायियों के लिए एक रूचि का विषय बन गया।

आज के इस व्यस्त जीवन में माता पिता अपने बच्चों पर ध्याान नहीं दे पाते हैं कि उनका बच्चा किस संगति में है, उसके दोस्त किस प्रकार के हैं क्योंकि नवयुवक जो कुछ भी सीखते हैं वह एक दूसरे के सम्पर्क में ही सीखते हैं। इस व्यसन से छुटकारा पाने के लिए परिवार के लोगों , सगे सम्बन्धियों और समाज का सहयोग करना बेहद जरूरी होता है।

कालिदास द्वारा शराब के दुष्प्रभावों के बारे में कहा गया है–

मन्दः प्रमादः कलश्च निद्रा, बुद्धिर्क्षयों धर्म विषर्यश्च।
सुखस्य कन्था नरकस्य पन्था, अष्टावनर्थाः घटके वसन्ति।।

अर्थात् मादकता, प्रमाद, कलह, अनिद्रा, बुद्धि का नाश, धर्म का नाश, सुख की समाप्ति और नरक का मार्ग आदि आठ दोष भरे पड़े हैं।

नशा क्या है?

लत (नशा) एक व्यवहार है वो व्यवहार जिसको व्यक्ति बार–बार करता है उससे कोई फायदा नहीं पहुँचता है उस लत से नुकसान होता है पर उसको बार–बार करता है उसको लत (नशा) कहते हैं। वह किसी चीज का और किसी चीज से भी हो सकता है।

वह अवस्था जो शराब, भाँग, अफीम या गाँजा आदि मादक द्रव्य के व्यवहार से उत्पन्न होने वाली दशा है। विशेष शराब, भाँग, गाँजा, अफीम आदि एक प्रकार की गर्मी उत्पन्न करता है जिससे मनुष्य का मस्तिष्क क्षुब्ध और उत्तेजित हो उठता है, तथा स्मृति (याद) या धारणा कम हो जाता है। नशा एक ऐसी स्थितिं है जिसके लिए व्यक्ति खुद को भूल जाता है और बस नशे में ही समा जाता है। मानसिक स्थिति को बदल देने वाला रसायन जो किसी को नींद या नशे की हालत में लाये उसे **''नशा''** कहते हैं।

शराब :–

शराब का सेवन यदि कम या सीमित मात्रा में किया जाए तो इसे कई देशों में सामाजिक रूप से उचित माना जाता है। सामान्यता इसका सेवन एक सामाजिक क्रिया, प्रेरणा या उत्तेजना के रूप में किया जाता है। यह एक शान्तिकर पदार्थ है यद्यपि यह नसों को शान्त करते हुए तनाव को कम करता है। परन्तु साथ ही साथ इसके सेवन से निर्णय क्षमता मन्द होने लगता है।

शान्तिकर पदार्थ :–

व्यसन के इस प्रकार में शान्तिदायक या पीड़ाशामक मादक पदार्थ आते हैं। शामक या अवसादक पदार्थ केन्द्रीय नाड़ीमण्डल का अशक्त करते हुए नींद उत्पन्न करते है। अतः इसका प्रभाव शान्तिकारक होता है। इस श्रेणी में ट्रैक्विलाइजर (शान्ति प्रदान करने वाले द्रव्य) ओर बार्विट्युरेट आते हैं। सामान्यता इन द्रव्यों का प्रयोग शल्य चिकित्सा के पूर्व और बाद में रोगियों को आराम और शिथिलीकरण के लिए किया जाता है। इसी प्रकार से चिकित्सा की दृष्टि से उच्च रक्तचाप, अनिद्रा और मिर्गी के रोगी को उपचार में देने के लिए शमक द्रव्य का प्रयोग किया जाता है।

उत्तेजक पदार्थ :–

उत्तेजक द्रव्य अधिकांशतः मुख से लिए जाते है, लेकिन कुछ पदार्थ जैसे मेथड्रीन इंजेक्शन द्वारा भी लिए जाते हैं। इन पदार्थो का व्यसन करने वाले व्यक्तियों में शारीरिक निर्भरता की तुलना में मानसिक निर्भरता अधिक होती है। उत्तेजक मादक पदार्थों का सेवन निद्रा और उदासी को दूर करते हुए व्यक्ति को चुस्त, सक्रिय और फुर्तीला बनाता है। डॉक्टर द्वारा ऐम्फेटामाइन की मध्यम डोज थकान को नियंत्रित करती है। इनमें कैफीन और कोकिन भी सम्मिलित है, परन्तु ऐम्फेटामाइन का दीर्घकालिक भारी उपयोग बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और आर्थिक विकारों को उत्पन्न करता है। अपराध जगत में ऐम्फेटामाइन ''अपर्स'' या ''पेपपिलस ड्रग्स'' के नाम से मशहूर है। इन उत्तेजक पदार्थों को अचानक बन्द कर देने से मानसिक बिमारियों व आत्महत्या जैसा विचार उत्पन्न होने लगता है।

नार्कोटिक पदार्थ :–

अफीम के विभिन्न रूप में उपलब्ध चरस, गाँजा, भाँग, हैरोइन (स्मैक, ब्राउन शुगर, मॉर्फीन, पैथेडीन) आदि व्यसन की नार्कोटिक श्रेणी में सम्मिलित हैं और प्रायः पौधों से प्राप्त होते हैं। हैरोइन मॉर्फीन, पैथेडीन और कोकीन या तो कश के रूप में लिए जाते हैं या फिर तरल पदार्थ के रूप में इंजेशन द्वारा अफीम, गांजा, चरस आदि को व्यक्ति या तो नाक से खींचता है या चिलम का सहारा लेता है।

भ्रमोत्पादक पदार्थ :–

इन पदार्थों में सर्वाधिक व्यसन एल.एस.डी. (LSD) का किया जाता है। यह एक कृत्रिम रसायनिक पदार्थ है। यह नशीला पदार्थ इतना शक्तिशाली है कि इसकी एक तोले से ही तीन लाख डोज बनाए जाते हैं। एल.एस.डी. लेने के पश्चात गांजे के समान ही फ्लैशबैक की घटना प्रारम्भ हो जाती है।

निकोटीन :–

निकोटीन पदार्थों में सिगरेट, बीड़ी, सिगार, चरूट, नास (Snuff) तम्बाकू सम्मिलित है। तम्बाकू की खेती की जाती है जिसके पत्ते चौड़े और कड़वे होते हैं।

हुक्का बार :–

हुक्काबार आजकल हर छोटे बढ़े शहरों और मॉल्स में देखने को मिल जाता है। स्कूल और कॉलेज के बच्चे हुक्का का कश लेते हुए दिख जाते हैं। हुक्के से खींचा गया तंबाकू का धुआं पानी से होता हुआ एक लंबे होज पाइप के जरिए फेफड़ों तक पहुँचता है। हुक्का पीना सिगरेट की तरह हानिकारक है क्योंकि दोनों उत्पाद के अंत में कार्सिनोजन लगा रहता है जो कि एक कैंसर पैदा करने वाला पदार्थ है।

ई–सिगरेट

कुछ स्कूली छात्र वाईटनर व मार्कर को सूंघ कर नशा के आदी हो गए हैं और सबसे महत्वपूर्ण एक प्रकार का नशा है एक इलेक्ट्रिानिक सिगरेट, ई–सिगरेट या वाष्पीकृत सिगरेट एक बैट्री चलित उपकरण है जो निकोटिन या गैर–निकोटीन के वाष्पीकृत होने वाले घोल की सांस के साथ सेवन की जाने वाली खुराक प्रदान करता है। यह सिगरेट, सिगार या पाइप जैसे धूम्रपान वाले तम्बाकू उत्पादों का एक विकल्प है। 2003 में एक चीनी फॉर्मासिस्ट ''होन लिक'' द्वारा इस–ई–सिगरेट का ईजाद किया गया और इसको 2004 में बाजार में उतारा गया।नकी कम्पनी ''गोल्डन ड्रैगन होल्डिंग्स'' ने 2005–2006 में बिक्री शुरू की थी और बाद में इसका नाम बदलकर रूयान रखा गया जो कि धूम्रपान जैसे शब्द से सम्बन्धित है।

जैसे–जैसे विज्ञान एवं तकनीकी का विकास होता गया वैसे–वैसे नशीले पदार्थों का स्वरूप भी बदलता गया है। वर्तमान समय में भारत में नशाखोरी के लिए चरस, गांज, कोकीन, स्मैक, एल.एस.डी., डस्कोट्रिन, मार्कजुआन, मारफीन, पैथीडीन एस्पिरीन, अयोडेक्स, टिन्चर, स्प्रीट, नेल रिमूवर, कोरेक्स, वाईटर, मार्कर, सर्पदंश, बिच्छू काडेक आदि का प्रयोग प्रचलन में है।

मादक द्रव्य के प्रकार

क्रम0 सं0	मदक द्रव्य का नाम	दुरूपयोग का तरीका	दुरूपयोग सहने का अल्पकालिक प्रभाव	दुरूपयोग का दीर्घ कालिक प्रभाव	छोड़ने के संलक्षण	स्तर
1	शराब	मुंह से	तंदरूस्ती की भावना, आवास आभाव, प्रेरणा शक्तिक्षीण व निर्णय शक्ति का आभाव	जिगर को हानि मस्तिष्क को सन्निपात मानसिकता	चिंता, नींद न आना, बहुत	थोड़ा सा
2	स्वापक पीड़ानाशक अफिम, मार्फिया, हीरोइन, ब्राउन	मुंह से, सुई द्वारा, धूम्रपान से	12 घण्टे तक तंदरूस्त बने रहने की भावना, भूख न लगना, उन्नीदापन	मानसिक क्षति, श्वास प्रणाली की क्षति तथा अन्य स्वास्थ्य सम्बन्धित समस्याएं	उल्टी, दस्त लगना, सर्दी, जुकाम, शरीर में ऐठन, मरोड़	बहुत
3	उत्तेजक, कोकिन, एम्फीटमाईन	मुंह से, सुई द्वारा, नाक द्वारा	सुख बोध, मानसिक और शारीरिक सक्रियता में वृद्धि उच्च रक्तचाप	अधिक चिंता नाक का अल्सर मस्तिष्क को क्षति अवसाद	अनिद्रा बेचैनी, शरीर में ऐंठन भूख में वृद्धि	बहुत उच्च
4	अवसादकारी, शराब, बारबीटरेट्स, डायजीपाम	मुंह से, सुई द्वारा	सुख बोध, चिंता से मुक्ति, नियंत्रण में कमी मानसिक और शरीरिक समन्वय में कमी	ग्लानि, थकान अस्पष्ट दृष्टि अनिद्रा अवसाद मांग शक्ति में कमी	सन्निपात , कांपना, अनिंद्रा, बेचैनी, दस्त, उल्टियां	बहुत उच्च
5	मतिभ्रम एन. एस,एल.एस. डी. मेस्कालाइन, फेनसाइक–लडाइन, पेसी–लोसाइबिन	मुंह से, सुई द्वारा	मन परिवर्तन उदासी, चेतना में उंची उड़ान मतिभ्रम	अवसाद मानसिक रोग पूर्व दृश्य	केवल मानसिक प्रत्याहार, संलक्षण शारीरिक प्रत्याहार लक्षण	निम्न

					नहीं	
6	देवकली मांग (Cannabis) गांजा, चरस	धूम्रपान, सुई द्वारा	संख बोध, दिल की तेज धड़कन, चेतना में वुद्धि, चेतना में संक्रियता	थकान, संभ्राति, मनोविकृति	चिंता,अनिंद्रा	निम्न

नशा के कारण

- कार्यस्थल व स्कूल में खराब प्रदर्शन।
- घर में यौन या शारीरिक शोषण, उपेक्षा व हालातों का ठीक न होना, ये सभी स्थितियाँ मनोवैज्ञानिक तनाव पैदा करती हैं, जिसे बचने के लिए लोग खुद से ही दवाएं ले लेते हैं खुद से दवा लेना ही नशे की लत का कारण बनता है।
- मानसिक रूप से स्वस्थ न होना, जैसे तनावग्रस्त रहना भी कारण है।
- नशे की लत कई परिवारों में पीढ़ी दर पीढ़ी चलती है, अनुवांशिक कारण भी नशे की लत का कारण है।
- कुछ जींस (Genes) मस्तिष्क को निकोटीन लेने के लिए प्रभावित करते हैं और नशे की लत का कारण बनते हैं।
- फिल्म जगत में हीरो, हीरोईन द्वारा किया गया नशा को देखकर खुद को उन जैसा बनाने की सोच भी नशा करने का कारण है।
- प्रेम में असफलता, बुरे संगत का असर भी नशे को बढ़ावा देता है।
- बड़े–बड़े शहरों में शौक की वजह से नशा करते हैं।
- इस देश के औद्योगिक केन्द्रों में आठ–दस घण्टे अत्यधिक असन्तोषजनक काम करने की दशाओं में कठिन परिश्रम करने के बाद श्रमिक इतना थक जाता है कि अपनी थकावट दूर करने के लिए उसे शराब व ताड़ी जैसा नशा करना ही पड़ता है।
- दोषपूर्ण पैतृक प्रतिमान भी वजह है नशा करने का एक कारण।
- अधिकतर बच्चे और नवयुवक नशे का सेवन करना अपने माता–पिता, बड़े भाई या घर के अन्य सदस्य की देखा–देखी शुरू करते हैं।
- नशीले पदार्थ के सेवन के कारण सामाजिक–सांस्कृतिक कारक भी हो सकते हैं।
- नशा आसानी से मिल जाता है यह भी एक कारण है नशा करने का।

नशे की आदत से बचाव के उपाय

- अपनी समस्याओं से अकेले नहीं जुझें। माता–पिता, अभिभावक व शिक्षक से खुलकर वार्ता करें।
- रात को देर तक घर से बाहर न रहें क्योकिं देर रात असमाजिक तत्वों के शिकार हो सकते हैं।
- शौक व मनोरंजन के लिए नशे का प्रयोग न करें क्योंकि शौक व मनोरंजन कभी–कभी घातक हो जाता है।

- बुरी संगत से बचें और जो बात गलत हो उसका विरोध करें निसंकोच और नशे के लिए प्रेरित करने वाले को साफ शब्दों में मना करें।
- सामाजिक गतिविधियों में, एन0एस0एस0, एन0सी0सी0, खेलकूद आदि अच्छे कार्यक्रमों में शामिल हों।
- यदि कोई आपका मित्र या रिश्तेदार नशा करता है तो उसको नशामुक्ति केन्द्र पर ले जाएं और किसी काउंसलर से सम्पर्क करें व उपचार करवाएं।

नशा पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए सरकार द्वारा चलाई जाने वाली योजनाएँ

- संयुक्त राष्ट्र द्वारा मार्च 1961 में नशीले ड्रग्स पर एक संधि द्वारा नशीले ड्रग्स एवं तस्करी के खतरे के उन्मूलन का प्रयास आरम्भ हुआ था एवं तत्पश्चात् इस संधि के प्रस्ताव को संशोधित करने हेतु मार्च 1972 में एक विज्ञप्ति अपनाई गयी थी। इस सभी संधियों का भारत हस्ताक्षरी है।
- भारत के संविधान का अनुच्छेद 47 यह आदेश देता है कि राज्य स्वास्थ्य को हानि पहुँचाने वाले नशीले मदिरा एवं ड्रग्स के उपयोग को सिवाय उन ड्रग्स के जो दवाओं के औषधीय प्रयोजनों हेतु प्रयुक्त होते हैं। निषेध करने के बारे में प्रयास करेगा।
- विश्व तम्बाकू निषेध दिवस 31 मई को विश्व भर में मनाया जाता है, जो विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के अवसर पर सभी देशों से तम्बाकू उत्पादों पर कर बढ़ाने की अपील की है, ताकि नये लोगों को तम्बाकू सेवन का आदी होने से बचाया जा सके।
- सरकार द्वारा टीवी, रेडियो, जगह–जगह पोस्टर पम्पलेट, अखबारों में इश्तिहार के माध्यम से नशा कितना घातक है मानव जीवन के लिए समझाने का प्रयास किया जाता है।
- सरकार द्वारा पुर्नवास केन्द्र की व्यवस्था द्वारा नशा को खत्म करने का प्रयास किया गया है।
- भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नशा मुक्ति के खिलाफ मुहिम की शुरूआत की है, मोदी जी ने अपने रेडियो सम्बोधन **''मन की बात''** में देश को नशा मुक्त बनाने के लिए भावनात्मक अपील की और सरकार नशा मुक्ति के लिए हेल्पलाईन स्थापित करने के प्रस्ताव पर हस्ताक्षर कर दिया है।
- सरकार स्कूल, महाविद्यालय, ग्राम पंचायत के माध्यम से एक नाट्य–नाटिका, लघु–नाटिका, रैली द्वारा लोगों को नशा के प्रति जागरूक करने का प्रयास कर रही है।
- सरकार ड्रग्स तस्कर, अफीम, गाँजा, चरस आदि प्रमुख नशा के साथ पकड़े जाने पर सरकार द्वारा दण्डात्मक कार्यवाही करने का विधान है।
- सरकार ने आम बजट 2020–2021 में सिगरेट, हुक्का, तम्बाकू पर एक्साइज बढ़ाया है।

सरकार चाहे तो नशा पर रोक लगा सकती है, परन्तु कई जगह विफलताओं का सामना करना पड़ता है सरकार तम्बाकू, गुटखा, पान–मसाला का सेवन करने वालों के लिए कोई कड़ा नियम नहीं निकाल पायी है जिससे तम्बाकू, गुटखा, पान–मसाला खाने वालों की संख्या में दिन–प्रतिदिन इजाफा होता जो रहा है, बीबीसी हिन्दी के अनुसार भारत में **105,175 टन** मादक पदार्थ जब्त किया गया है रिपोर्ट आंकड़े 2011–2014 तक के। ड्रग्स तस्करी के दर्ज मामले भारत में **कुल–64,737** रिपोर्ट 2011 से 2014 तक के।

भारत में नशा करने वालों की संख्या–2018 (%)

नशा पदार्थ	प्रयोग (%)
Alcohol	14.6
Cannabis	2.83
Opioids	2.06
Sedatives	1.08
Cocaine	0.10
ATS	0.18
Inhalants	0.70
Hallucinogens	0.12
Inject Drugs	0.85

यह रिपोर्ट नेशनल ड्रग्स डिपेन्डेंस ट्रीटमेन्ट सेन्टर, एम्स नई दिल्ली–2018 की है।

सुझाव

- विद्यालय के पाठ्यक्रम की संरचना इस प्रकार होना चाहिए जिससे बालक नशे के प्रति जागरूरक हो सके।
- शासन द्वारा प्रत्येक जिले तथा शहरों में नशा मुक्ति केन्द्र बनाना चाहिए।
- शासन द्वारा ऐसे (NGO) को सहयोग देना चाहिए जो नशाखोरी के खिलाफ कार्य करते हैं।
- प्रत्येक विद्यालय एवं महाविद्यालय में हर छः महीने में सभी विद्यार्थियों को मेडिकल चेकअप कराना चाहिए। जिससे विद्यार्थियों की नशे की समस्या को ज्यादा बढ़ने से पहले रोका जा सके।
- ऐसे लोगों को जिसे नशे की लत हो उनके अभिभावकों को उन्हें अकेला नहीं छोड़ना चाहिए तथा उनके साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए एवं उनके आस–पास का वातावरण भी सुखमय होना चाहिए।
- कई अभिभावकों का काम के प्रति अधिक व्यस्त रहने से उनके बच्चे अकेलापन महसूस करते हैं जिससे वो गलत आदतों, असुरक्षा की भावना एवं खराब मानसिक स्वास्थ्य के शिकार हो जाते हैं।
- कई लोग अपनी निम्न आर्थिक स्थिति के कारण भी तनाव की वजह से नशे की लत के शिकार हो जाते हैं। ऐसे में अभिभावक को उन्हें सही दिशा दिखाना चाहिए।
- शासन को नशीले पदार्थों की उत्पत्ति पर रोक लगा देना चाहिए जिससे हमारी युवा पीढ़ी में बढ़ती समस्या दूर हो सके।
- सरकार को चाहिए की डॉक्टर की सहायता से हर रविवार को एक कैंप लगाए जगह–जगह चाहे नगर हो या गाँव जहाँ लोगों को नशे के प्रति जागरूक किया जा सके व उनके इलाज को एक रूप दे सके।
- डोपिंग का राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव को रोका जाए जिससे हमारे देश के सम्मान को ठेस न पहुँचे।
- ऐसे फिल्मों पर रोक लगाई जाए जो नशे के प्रति लोगों को आकर्षित करे।

संदर्भ ग्रथ सूची

- जोगदण्ड. बी (नई दिल्ली). समाज का अभिशाप नशा. नई दिल्ली : पंकज पुस्तक मन्दिर.
- श्रीवास्तव अखिलेश्वर लाल ;(1983). *चिकित्सा समाज विज्ञान की रूपरेखा.* वाराणसी: विनोद चन्द्र पाण्डेय निदेशक उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ.
- .सेठी, डॉ नितिन ; (2012). *सामुदायिक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण.* आनन्द विहार नई दिल्ली: नवसृजन साहित्य आनन्द विहार नई दिल्ली.
- .राजीव ,डॉ0,शर्मा. (2000).*नशा और एड्स से बचाव.* नई दिल्ली:डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा) लि.
- सिंह, प्रेम. (2016). व्यावसायिक पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में नशे की प्रवृत्ति : एक वैयक्तिक अध्ययन. प्रेम सिंह, व्यावसायिक पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में नशे की प्रवृत्ति : एक वैयक्तिक अध्ययन ; (पेज 3–4). राजस्थान.
- पाण्डेय गणेश डॉ0 (2007). भारतीय सामाजिक समस्याएं नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन
- चौबे राजेन्द्र कुमार (2011). छात्रों में नशे की प्रवृत्ति कारण एवं निदान . अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस.
- चन्द्रसेन. (2001). मद्य–निषेध नशे का व्यसन. महरौली, नई दिल्ली: शारदा प्रकाशन.
- शर्मा, पवित्र. कुमार. (2009). सामाजिक समस्याएं : कारण एवं समाधान. दिल्ली: आकाश गंगा पब्लिकेशन .
- प्रसाद, धनेश्वर. (2018). शराबबंदी एक फौलादी फैसला. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
- गर्ग,सी0एल0, डॉ0. (2011). *नशीले पदार्थ समस्या और समाधान.* दिल्ली: सुन्दर साहित्य प्रकाशन.
- तिवारी, ए. के.(2019). समाजशास्त्र *एक* सारगर्भित विवेचन. प्रयागराज: टारगेट प्रकाशन.

शोध–पत्र–

- शराब, मादक द्रव्य और एच0आई0वी, समाज कार्य विद्यापीठ– IGNOU
- नशा करने वाले तथा न करने वाले विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षणिक उपलब्धि, समायोजन तथा पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन– शोधकर्त्री :रंजना जैन
- नशा मुक्ति केन्द्रों की नशाखोरी की समस्या के समाधान में भूमिकाः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–शोधार्थीः काजल वाजपेई
- सोशल मीडिया का युवा पीढ़ी पर पड़ने वाले सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन (ग्वालियर जिले के विशेष संदर्भ में)– शोधार्थीः श्रीमती अंशु चौहान (समाजशास्त्र)
- सोशल मीडिया का अकादमिक महाविद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के नैतिक व सामाजिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन– शोधार्थाः सन्तोष नरूका